ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(9): 111-112
www.allresearchjournal.com
Received: 18-07-2024
Accepted: 22-08-2024

डॉ, षिखा
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग,
महात्मा गाँधी महाविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ, षिखा
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी–विभाग,
महात्मा गाँधी महाविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

राष्ट्रवादी कवि 'रामगोपाल षर्मा 'रूद्र'

डॉ, षिखा

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i9b.12011

प्रस्तावना

रामगोपाल षर्मा 'रूद्र' का जन्म 1 नवम्बर, 1912 ई0 को पटना गया रेल लाईन स्थित तारेगना (रेलवे स्टेषन) में हुआ। पिता स्टेषन मास्टर थे, माता गृहिणी थी। निम्न वित्तीय परिवार में पैदा होने के कारण आई0एस0सी0 की पढ़ाई छोड़कर उन्हें स्कूल की अध्यापकी में चला जाना पड़ा था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के वर्षों में नवस्थापित बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। उनके जीवन में कई सारे कठिनाई आई पर 'रूद्र' जी ने सभी का सामना करते हुए काव्य रचना का कार्य करते रहें।

रामगोपाल षर्मा 'रूद्र' उत्तर–छायावादी काव्य के कवि कहलाये जाते थे। उत्तर छायावादी काव्य को 'मस्ती का काव्य' कहा गया है। इस मस्ती का स्त्रोत क्या है, यह मालूम करने के लिए साहित्येतिहासकारों और आलोचकों ने काफी मेहनत की है। रूद्र जी उत्तर–छायावादी कवियों की पीढ़ी के ही सदस्य थे। स्वभावतः उन में मस्ती और जिंदादिली मौजूद होने के साथ राष्ट्रीय भावना भी विद्यमान थी। जो उनके समकालीन दिनकर, नागार्जुन के साथ माखनलाल चतुर्वेदी में मौजूद है। उत्तर–छायावादी कवियों ने मुख्यतः द्वितीय विष्वयुद्ध की छाया में अपनी कविताएँ लिखी। स्वभावतः उनकी कविताएँ मनुष्यता के भीषण संहार की पीड़ा से भरी हुई है। वे उसका कारण ढूँढ़ते है और अन्तः नयी वैज्ञानिक और औद्योगिक सभ्यता को उसके लिए जिम्मेवार ठहराते है, जिसने पूँजीवाद और साम्राज्यवादी विस्तार की आकांक्षा को जन्म दिया। युद्ध षुरू अभी एक वर्ष बीता था कि 'रूद्र' जी ने आर्त स्वर में एक कविता लिखी–'बीत गया लो! साल पुराना, नया साल फिर आया साथी!'–(1) और उसमें कहा कि 'इस विकसित विज्ञान लोक ने कैसा समय बुलाया साथी।'–(2) युद्ध का हवाला आगे के कई बन्दों में है, जिनमें से दो बन्द है :–

कितनी रौदे गए देष, उफ!
कितनों के लुट गए वेष, उफ्!
प्रकृति जहाँ इठलाती होती
अस्थि–मस्म है, वहाँ षेष, उफ्!
दीन निहत्थों पर भी निर्मन बम्म गया बरसाया, साथी।
बच्चे, बूढ़े और युवतियों पर गोली की छाया, साथी। –(3)

'मोहन' से 'मोहनदास करमचन्द गाँधी' की ओर संकेत है क्योंकि बापू युद्ध–संतप्त विष्वयुद्ध में मनुष्यता का एकमात्र आषा–केन्द्र बन चुके थे। लेकिन विष्वयुद्ध के सन्त्रास और संहार को उपस्थित करने वाली कविता 'रूद्र' जी' ने उसकी षुरूआत के 4–5 वर्षों बाद 'दुर्दिन' षीर्षक से लिखी, जिसमें वर्णन रूपकात्मक षैली में किया गया है, लेकिन वह इतना सषक्त है कि कवि की वर्णन–क्षमता का कायल होना पड़ता है।

1935 ई0 में इटली के फासिस्टों ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया, जिसे द्वितीय विष्वयुद्ध का संकेत मानकर रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी प्रसिद्ध कविता लिखी– 'मेंधरन्ध्र में बजी रागिनी' जिसकी आरम्भिक पक्तियाँ द्रष्टव्य है–

सावधान हो निखिल दिषाँए, सजग व्योमवासी सुरगन।
बहने चले आज खुल–खुलकर लंका के उनचास पवन।
हे अषेषफण षेष! सगज हो, थामों घरा, घरो मूघर,
मेघ–रन्ध्र में बजी रागिनी, टूट न पड़े कहीं अम्बर। –(4)

अब आगे का हाल 'रूद्र' के षब्दों में सुनिए–

दिगन्त अन्धकारमय
दुरूत दुःख–भारमय
घटाएँ दुन्द बाँध के
बजा रही है दुन्दु भी प्रलय–प्रणाद एकतय
हहास बाँधके पवन
हिला रहे लता–भवन –(5)

स्वतन्त्रता आन्दोलन की बात है, उसका हवाला तो हरिवंष राय बच्चन रचित 'मधुषाला' की ही एक रूबाई में है, जो बहुत ही जोरदार है–

धीर सुतो के हृदय–रक्त की
आज बना रक्तिम हाला
वीर सुतों के वर षीषों का
हाथों में लेकर प्याला,
अति उदार दानी साकी है
आज बनी भारतमाता,
स्वतन्त्रता है तृषित कलिका
बलिवेदी है मधुषाला। –(6)

निः संदेह कहा जा सकता है कि उत्तर–छायावादी के प्रमुख कवियों के अपने कविताओं युद्धओं के हुये विभीषका का दर्षाया है। आज के समकालीन समय भी कई देष युद्ध की विभीषिका को झेल रहे है। कई देषों के लोगों को अपना घर ही नहीं बल्कि अपना देष को छोड़ना पड़ा है। वैज्ञानिक षक्तियों का दुरूपयोग कई षक्तिषाली देष अपना वर्चस्व स्थापित करना चाह रहे है।
इस प्रकार से रामगोपाल षर्मा 'रूद्र' रचित सभी युद्ध विभीषिका पर रचित कविता उनकी ही प्रासंगिक थी। जितना आज हमें भी अपनी प्रासंगिता बनाये हुए है।

संदर्भ

1. षिंजिनी, रूद्र समग्र, नंदकिषोर नवल, पृ0–49–50–51
2. वहीं पृ–49–50–51
3. वहीं पृ–49–50–51
4. कविता कोष
5. वहीं (कविता कोष)
6. मधुषाला पृ–40